International Journal of Research Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

आधुनिक संदर्भों में 'कबीर–बानी' की उपादेयता

सुशीला
Deptt of Hindi
Email : ms4sushila@gmail.com
Ward no. 6 Gali no. 1,Thana Kalan Road, Sant Colony
Kharkhoda, Sonepat (Haryana)

प्रस्तावना–

कबीर हिन्दी–साहित्य की श्रेष्ठतम् विभूति है। वे वाणी के उन वरद पुत्रों में हैं, जिनकी प्रतिभा के प्रकाश से हिन्दी साहित्यकाश चि–आलोकित रहेगा। कबीर की 'बानी' में एक अलौकिक रसधारा प्रवाहमान है। भवभूति ने वाणी को आत्मा का काव्य कहा है। वह अविनाशी और अमर मानी गई है। कबीर की वाणी वास्तव में आत्मा की कला है। तभी तो उसमें गूढ़, आध्यात्मिकता अक्षय आनंद और अनंत कल्याण की भावना भरी है, जिसे प्राप्त करने के लिए महर्षि याश्रवल्क्य की पत्नी मैत्रेयी व्याकुल हो उठी थी।

'कबीर बानी' का महत्व

कबीर की बानी आज भी उतनी महत्व रखती है जिताना िकवह उस समय महत्वपूर्ण थी। यही बात तो यह है कि आज के युग में कबीर को फिर से समझने की आवश्यकता है क्योंकि यह कटु सत्य है कि कबीर की बाणी गिरते हुए मूल्यों के उत्थान का मार्ग दिखा सकती है। आज का युग समस्याओं का युग है, जिसमें छल–प्रपंच भी एक समस्या है। यह ठीक है कि प्रेम से मीठे बोल बोलने वालों का अभाव हो गया है, फिर भी ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो मीठा बोलते दिखाई देकर अनेक प्रकार की हानियाँ कर सकते हैं। कबीर सम्पूर्ण मानव जाति को ऐसे दुरंगे लोगों से सचेत करते हैं–'जेता मीठा बोलवाँ तेता साधि न जाणि'

ऐसे समय में कबीर की बानियों की आज भी उतनी ही उपयोगिता है जितनी उपयोगिता कबीर के समय में अर्थात् हिन्दी–साहित्य के मध्यकाल में थी। इसी अमृत तत्व को

International Journal of Research Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

पाकर निष्प्राण होती हुई मध्ययुगीन भारतीय जनता एकबार जीवन और ज्योति से फिर जगमगा उठी थी, उसी जीवन–ज्योति की आज भी आवश्यकता है। यह महत् कार्य कबीर की बानियों द्वारा आज भी संभव है।

कबीर कालीन काव्य के विभिन्न सदर्न्भों को लेकर कबीर पर अनेक शोध कार्य हो चुके हैं, कबीर पर अनेक समीक्षाएँ लिखी जा चुकी हैं, जिनमें हजारीप्रसाद द्विवेदी का 'कबीर', डॉ0 रघुवंश का 'कबीर : एक नई दृष्टि', रामचन्द्र तिवारी का 'कबीर मीमांसा', डॉ0 धर्मवीर का 'कबीर नई सदी में', परसुराम चतुर्वेदी का 'उत्तार भारत की संत परम्परा', डॉ0 राम कुमार वर्मा का 'कबीर एक रहस्यवाद' तथा माता प्रसाद गुप्त की 'कबीर ग्रंथावली' आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय है। कबीर की बेजोड़ बानियों को लेकर अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ हो चुकी हैं और वर्तमान में यह क्रम जारी है। आज भी कबीर के अनेक सम्प्रदाय–कबीर चौरा मठ (काशी), भगतई शाखा (धनौटी), छत्तीसगढ़ी शाखा (जबलपुर) , कबीर मठ (विद्‌दूर), द्वादश पंथ आदि के नाम से भिन्न–भिन्न स्थानों में कबीर की वाणियों की अलख जगा रहे हैं। आज घर–घर और गली–गली कबीर की सखियों, शब्दों और रमैनियों का पाठ और पुनर्पाठ हो रहा है। आज विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राएँ कबीर काव्य को लेकर अनेक परियोजना–कार्यों तो प्रदर्शनी के रूप में भी अग्रमान है। आज के इस आपाधापी के युग में सरकार द्वारा ऐसे परियोजना कार्यों को बढ़ावा मिल रहा है। इतना सब होने के बावजूद पुनश्चर्या पाठ्‌यक्रम के अन्तर्गत प्रस्तुतकर्त्ता का यह परियोजना–कार्य सर्वथा भिन्न है। इसमें कबीर की चुनिदा बानियों को केन्द्र में रखते हुए कबीर–काव्य के गत्यात्मक और विकासशील स्वरूप को ध्यान में रखा गया है।

कबीर बानी की आवश्यकता

आज का समाज यद्यपि समुन्नत है, किन्तु जप, छापा और तिलक आदि भी ज्यों की त्यों है। समाज में घोर अन्धविश्वास व्याप्त है, हर वर्ग जंत्र, मंत्र और तंत्र के माध्यम से समस्या के समाधान की बात सोचता है। कबीर ने अपने युग में इस प्रकार के धर्मभीरूओं की

कटु आलोचना की थी। एक ओर तो उन्होने हिन्दूओं के जप, तप, वंदना, रोजा, हलाल आदि का की खिल्ली उड़ाई थी। ये सभी कार्य कबीर ने अपनी काव्यमयी वाणियों के माध्यम से सम्पन्न किया था। आज भी इन वाणियों की महती आवश्यकता है। कबीर की साधना–पद्धति में मन को संयमित करने विशेष महत्व बताया गया है। आज के संदर्भ में कबीर द्वारा उपदिष्ट मन का संयम भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। आज के युग की सबसे बड़ी आवश्यकता धर्मनिरपेक्षता की है। कानून के माध्यम से भारत की विभिन्न जातियों के मध्य एकता बनाए रखने की बात कही जा रही है तथा भारत को अखण्ड और एक बनाए रखने का संदेश दिया जा रहा है। किन्तु यह विषय भावना का है, चिन्तन का नहीं। भावना के माध्यम से व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ा जा सकता है। कबीर–बानी इस दिशा में एक अभिनव संदेश दे सकती है।

आज के युग की सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि ऊँच–नीच का भेदभाव समाप्त किया जाए। ब्राह्मण कुल में जन्म लेने से कोई बड़ा नहीं हो जाता और मेहतर के घर जन्म लेने से कोई छोटा नहीं हो जाता। यह धारणा आज नैतिक और सैंद्धान्तिक रूप से स्वीकार की जा रही है, किन्तु बड़े–बड़े नीतिवादी और समाज–सुधारक इस तथ्य की व्यावहारिकता से कतराते हुए देखे जा रहे हैं। कबीर ने अपने युग में समानता के लिए समरसता की जो अलख जगाई थी, उसके स्वर आज भी मुखर हैं–

जो तू बाभन बाभनी जाया।

आन बाट तू काहे न आया।।

आज मानव शांति की खोज में इतस्ततः घूम रहा है किन्तु उसे न तो मंदिर में शांति मिल रही है न मस्जिद में और नही गिरिजाघर में, ऐसे समय में 'मोको कहाँ ढूँढ़े बंदे मैं तो तेरे पास में', जैसी बाणियाँ समाज के लिए नितांत सार्थक सिद्ध हो सकती हैं। आज आत्मीयता का ह्रास होता जा रहा है, उस आत्मीयता को सर्वजनहिताय में परिवर्तित करने के लिए इन बानियों की सार्थकता स्वतः सिद्ध है।

International Journal of Research Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

कबीर बानी का उद्देश्य

आज के इस विषाक्तपूर्ण आपाधापी के युग में मनुष्य दिवा–रात्रि अनेक प्रकार के संत्रासों से आक्रांत है। वह किसी न किसी रूप में शांति की एक सुनिश्चित और निरापद राह खोजना चाहता है। इसके लिए कबीर–बाणी एक औषधि और मरहम के रूप में अपनी अहम् भूमिका अदा कर सकती है। नैतिकता की होड़ में स्त्री व पुरूष समुदाय जो कुछ कर रहा है, वह शांति का हेतु नहीं है। आज नारी की साज–सज्जा व कृत्रिम सौंदर्य पुराने आदर्शों को छोड़ चुका है। उन आदर्शों की स्थापना कग लिए कबीर–वाणियों की नितांत आवश्यकता है। आज का पुरूष नारी के प्रति उतना उत्तरदायित्वपूर्ण नहीं है, जितना पहले था। इस प्रकार के समय में कबीर द्वारा बताये गये, आत्मा–परमात्मा के प्रतीक पति–पत्नि के संबंधों की अतीव आवश्यकता है। ऐसे संक्रमण काल में कबीर की ये बाणियों पावनता का एक नया संदेश दे सकती हैं–

हरि मोर पीउ, मैं राम की बहुरिया

आज कहीं–कहीं यह भी देखा जा रहा हे कि निम्न वर्ग के व्यक्ति अपने धर्म का परिवर्तन कर रहे हैं। यदि नहीं कर रहे तो कम से कम उसके पीछे परेशान दिखाई दे रहे हैं। ऐसी अवस्था में धर्म–परिवर्तन के इस उठते हुए तुफान को रोकने के लिए कबीर की वाणियाँ प्रासंगिक हैं। कबीर ने आध्यात्मिक साधना का एक ऐसा नवीन मार्ग प्रशस्त किया, जिसकी साधना सोते–जागते, उठते–बैठते तथा दैनिक जीवन का प्रत्येक कार्य करते हुए संभव है, क्योंकि इस साधना में तीर्थ, मंदिर, मस्जिद और मूर्ति–पूजा को कोई स्थान नहीं दिया गया है। ढाई आखर पढ़े कबीर ने अंधकार में मुक्त होने हेतु प्रेम की राह पर चलने की बात कही। उन्होने समाज के लोगों का आहवान करते हुए कहा कि ''ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय'' अहंकार रहित मनुष्य ही प्रेम का अधिकारी है। उन्होने स्पष्ट कहा ''राजा–प्रजा जेहि रूचे, सीस देय ले जाय'' उन्होने मन को जलाकर मसि बनाकर राम का नाम लिखने का आहवान करने वाले कबीर ने तथाथित बड़ों को बड़ा नहीं माना वरन् उन्हे पेड़ खजूर कहकर

बेकार बताया। संत महाकवि के क्रांतिमूलक विचारों ने अवाम को बहुत अधिक गहरे तक प्रभावित किया है।

इस प्रकार कबीर ने अपनी वाणियों से मानवता को प्रबोधित किया है। मानव में उदात्त भावनाएं जगाने के कारण संदर्भों में कबीर बाणियों की उपादेयता अधिक बढ़ गयी है।

सन्दर्भ सूची :

1 राकेश रंजन : अभी अभी जनमा है कवि (2007), पृ 156
2 राकेश रंजन : अभी अभी जनमा है कवि (2007), पृ 15
3 हरिशचंद्र पाण्डेय–वागार्थ : जुलाई 2009, पृ 10
4 राकेश रंजन : बहुवचन : जुलाई–सितंबर (2009), पृ 16
5 अशोक वाजपेयी : दुःख चिट्ठीरसा है (2008), पृ 45
6 अशोक वाजपेयी : दुःख चिट्ठीरसा है (2008), पृ 71
7 राकेश रंजन : बहुवचन : जुलाई–सितंबर (2009), पृ 69